प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत में असीम संभावनाये हैं। प्रधानमंत्री ने भारत में संघवाद के कारण को साबित किया है। वो शक्ति के हस्तांतरण और राज्यों को जहां तक हो सके आत्मनिर्भर बनाने में विश्वास रखते हैं। उनके अपने शब्दों में, सभी राज्य टीम इंडिया का हिस्सा है जो एक गौरवशाली और आत्मविश्वासी राष्ट्र बनाने की दिशा में काम कर रहें हैं। इस तरह एक लीडर द्वारा किये जा रहे मार्गदर्शन को देखकर आप सोच रहे होंगे की संघवाद की ये विचारधारा जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लागू होती होगी। लेकिन अफसोस की बात है कि ऐसा नहीं है।

श्रीनिवासन के नेतृत्व वाली बीसीसीआई की अफसरशाही इस उदाहरण का अनुसरण नहीं करना चाहती क्योंकी वो अपने स्तर पर भारतीय क्रिकेट की संघीय विचारधारा पर लगाम लगाने की पूरी कोशिश कर रही हैं। राजस्थान को सभी आयु समूहों के सभी घरेलू प्रतियोगिताओं से बाहर करने की उनकी योजना इसका नवीनतम उदाहरण है। सोचिये, दो बार की रणजी चौम्पियन राजस्थान की टीम को इस तरह के प्रीमियर टूर्नामेंट में जगह नहीं दी जाती है, आखिर क्यों? सिर्फ इसलिये क्योंकी अपना प्रतिनिधि चुनने के लिये वैध चुनावी प्रक्रिया अपनाने का राज्य संघ का विचार उन्हे पसंद नहीं है। श्रीनिवासन के जागीर के गलियारे में डर का आलम यह है कि वो लोग राजस्थान को सभी आयु वर्ग के टूर्नामेंट से बाहर रखने की हद तक चले गए हैं। मुझे लगता है की उन्हे प्रधानमंत्री को देखकर कुछ सीखना चाहिये।

भाजपा सभी 28 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों में सत्ता में नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि प्रधानमंत्री गैर भाजपा राज्यों की अनदेखी कर रहे हैं। जब वह देश के प्रधानमंत्री है तब वह पूरे भारत के लिए है। सत्ता पाकर आपको संकीर्ण नहीं होना चाहिये। लेकिन श्री श्रीनिवासन इस तरह नहीं सोचते। श्रीनिवासन की नजर में जो उनके विपक्ष में है वो वास्तव में उनका विरोधी हैं। इससे भारत को एक बेहतर क्रिकेट राष्ट्र बनाने के लिए एक टीम के रूप में काम नही हो पायेगा। एक साथ रहकर हम अपराजेय हो सकते हैं, लेकिन विभाजित होने पर हमे विभिन्न स्तर पर केवल विफलता ही मिलेगी।

बीसीसीआई चयनकर्ताओं ने इंग्लैंड श्रृंखला के लिए टेस्ट गेंदबाज के रूप में राजस्थान के पंकज सिंह को चुना है। हो सकता है यह गलती से हो गया हो क्योंकी उच्चतम स्तर पर अवसरों की बात की जाये तो राजस्थान के अन्य प्रतिभाशाली खिलाडियों को प्रेक्टिस के लिये ढंग का खेल मैदान तक नहीं मिल रहा है। हमारे पास रॉबिन बिष्ट जैसे खिलाड़ी हैं जिन्होने रणजी ट्राफी में लगातार ढ़ेरो रन बनाये हैं लेकिन आज वह फ्रेम में भी नहीं है। राजस्थान में आज देश की कुछ सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाएं है लेकिन अवसर के बिना प्रतिभा का कोई महत्व नहीं होता।

लेकिन राजस्थान विपक्षी राज्य संघों के प्रति श्रीनिवासन की उदासीनता का सिर्फ एक उदाहरण है। उन ताजातरीन रिपोर्टो को देखें जिसमें बताया गया है कि वानखेड़े स्टेडियम टीवी प्रोडक्शन के लायक नहीं है। विश्व कप 2011 के फाइनल, विश्व कप 1987 के

सेमीफाइनल और विश्व कप 1996 के मैचो और कई अहम टेस्ट मैचो सहित तमाम प्रतिष्ठित मैचों की मेजबानी करने वाला स्टेडियम अचानक मानकों से नीचे हो गया? अगर आप समझदार है तो इसके निहितार्थ को समझें। एक गतिशील और दूरदर्शी नेता श्री शरद पवार कभी सत्ता और शक्ति वाले लोगो के साथ इतना नीचे नहीं गये। (अंतर पर ध्यान दें क्योंकी कौन नहीं जानता की श्रीनिवासन के अलावा सत्ता में कौन है)।

बिहार को देखिये यह श्रीनिवासन और उनके साथियों के कुप्रबंधन का एक और बेजोड़ उदाहरण है। कभी रणजी ट्राफी का हिस्सा रहा यह पूर्ण सदस्य राज्य अपनी मातृसंस्था में फिर से शामिल होने के लिए संघर्ष कर रहा है। आखिर क्यों? क्योंकि झारखंड के बंटवारे के समय बिहार को एक बार फिर नजरअंदाज कर दिया गया था। हैरत की बात तो ये है कि नए राज्य झारखंड को तो मान्यता मिल गई लेकिन बिहार को मान्यता नहीं दी गई। इसके परिणामस्वरुप बिहार आज श्रीनिवासन और उनके साथियों के निर्णय लेने की क्षमता के अभाव की वजह से संघर्ष कर रहा है। आज हमारे पास आदित्य वर्मा के रुप में एक योग्य प्रशासक है जो एड़ी चोटी का जोर लगा रहा है लेकिन उनके बिहार के लिये श्रीनिवासन और उनके साथियों द्वारा कोई सुनवाई नहीं की जा रही है।

मुझे डर है कि अगर यही प्रवृत्ति लंबे समय तक बनी रही तो हम दूरदराज के इलाकों के उन प्रतिभाशाली खिलाड़ियों से वंचित रह जायेंगे जो देश के लिये उपलब्ध हैं। हम इस कटुता को जितना बढ़ावा देंगे उतना ही एक महान क्रिकेट राष्ट्र बनने से दूर होते जायेंगे। अंततः श्रीनिवासन को याद रखना चाहिये की वो इस खेल की वजह से हैं ना की यह खेल उनकी वजह से। श्रीनिवासन को डंकन फ्लेचर के पर कतरने में तीन साल में एक नहीं बल्कि दो इंग्लैंड टूर लग गये। मुझे नहीं पता की लोगों को श्रीनिवासन को मानने की मूर्खता का एहसास होने के लिये अभी और कितनी गलतियों की जरुरत पड़ेगी।

यहां हम प्रधानमंत्री मोदी की तरह टीम इंडिया का निर्माण करना चाहतें हैं। लेकिन अगर हम एकजुट होने में असफल रहे तो हमे संघर्ष करना पड़ेगा जैसे इंग्लैंड की मौजूदा सीरीज में देखने को मिला। लेकिन क्या कोई सुन रहा है?